# सतगुरू अजायब के अनमोल उपदेश

1. मानस जामा परमात्मा का अनमोल उपहार है। परमात्मा के बाद यह सृष्टि की सर्वश्रेष्ट रचना मानी गयी है। केवल इस शरीर के द्वारा ही आत्मा परमात्मा से मिल सकती है।

2. संतमत के अनुसार पूरनसंतों का मार्ग, हमें एक अच्छा, स्वच्छ और नैतिक जीवन, प्यार, दया और श्रद्धा के साथ जीने की शिक्षा देता हैं तथा असहाय लोगो की सहायता करना बताता है। संत चाहते हैं कि हम अच्छे विचारों को अपनाएं, अच्छे शब्दो को बोले तथा अच्छे कर्म करे।

3. एक सत्संगी (नामलेवा या संतो के शिष्य) को अपने परिवार तथा आस–पास के लोगों के साथ प्रेम तथा शान्तिपूर्वक जीवन जीना चाहिए।

4. सत्संगी सच्चाई और सादगी का जीवन जीते हैं तथा अपनी रोजी रोटी के साधनों के लिए कड़ी मेहनत, ईमानदारी के साथ करते हैं।

5. शिष्य गुरू और परमात्मा पर पूरा भरोसा रखता है, चाहे कितनी भी परेशानियां आ जायें, वह चिंता नहीं करता और हमेशा खुश रहता है। संतों का कहना है कि परमात्मा इंसान को सब कुछ देने वाला है।

6. संतमत संतोष का जीवन सिखाता है।

7. संतमत करनी का मार्ग है कथनी का नहीं है।

8. संतों का कहना है कि परमात्मा ने हर जीव की उत्पत्ति एक महान स्रोत (नाम या शब्द) से की है और सभी जीव उसकी नजर में एक समान हैं। सभी जीवित प्राणियों के लिए प्रत्येक को अहिंसा तथा दया की भावना रखनी

चाहिए। यही कारण है कि पूरन संत हमें शाकाहारी भोजन करने की शिक्षा देते हैं तथा किसी भी प्रकार के नशे को करने से रोकते हैं।

9. संतों का कहना है कि हमें यह समझना चाहिए कि जो कुछ भी हमें इस संसार में मिला है, परमात्मा ने हमें उपहार के रूप में दिया है।

10. संतों का रास्ता 'प्यार' का रास्ता है। उनकी दया और कृपा से जो भी कोई इस रास्ते पर आता है, वह नाम का अमृत प्राप्त करता है।

11 संत अपने शिष्यों को नाम का दान देते हैं। वह अपने शिष्यों को इस मार्ग पर चलने के लिए भजन–सिमरन करने का तरीका सिखाते हैं। हर रोज भजन–सिमरन करने से हम अपनी आत्मा को खुराक देते हैं क्योकि आत्मा की खुराक भजन–सिमरन है।

12 संत सलाह देते हैं कि हमें दूसरों की कॅमियाँ या उनकी निंदा कभी नहीं करनी चाहिए बल्कि अपने आप का सुधार करना। हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि दूसरों की निंदा करने से हमें कितना भारी नुकसान होता है।

13 संतों का कहना हैं कि जो कोई भी इस संसार में आया है उसे एक दिन यह से जाना है। एक सत्संगी को इस संसार में प्रत्येक दिन को आखिरी दिन समझकर जीना चाहिऐ।

14 संत इस बात पर जोर देते हैं कि हमें अपने माता–पिता तथा बड़ों की देखभाल और मदद जरूरत पड़ने पर प्रेम–पूर्वक करनी चाहिए।

15 हमें भजन–सिमरन को जीवन में पहला स्थान देना चाहिए और हर रोज सुवह–शाम, भजन–सिमरन प्यार और विश्वास के साथ करना चाहिए।

16 सत्संग मनुष्य के लिए वास्तव में लाभकारी है।

1. ***मानस जामा परमात्मा का अनमोल उपहार है। परमात्मा के बाद यह सृष्टि की सर्वश्रेष्ट रचना मानी गयी है। केवल इस शरीर के द्वारा ही आत्मा परमात्मा से मिल सकती है।***

**व्याख्या**

आत्मा को मानस जामा 84 लाख योनियों के बाद केवल एक बार मिलता है। यदि मनुष्य अपने जीवन काल में पूरनसंत की खोज कर लेता है, उनसे नाम का दान प्राप्त कर लेता है और भजन–सिमरन गुरू की दी हुए शिक्षा तथा हुकुम के अनुसार करता है तो वह गुरू की कृपा से जीवन–मृत्यु के चक्कर से आजाद होकर शान्ति तथा प्रकाश के देश, सचखण्ड में पहुंचकर, परमपिता परमात्मा में विलीन हो जाता है।

2. ***संतमत के अनुसार पूरनसंतों का मार्ग, हमें एक अच्छा, स्वच्छ और नैतिक जीवन, प्यार, दया और श्रद्धा के साथ जीने की शिक्षा देता हैं तथा असहाय लोगो की सहायता करना बताता हैं। संत चाहते हैं कि हम अच्छे विचारों को अपनाएं, अच्छे शब्दो को बोले तथा अच्छे कर्म करें।***

**व्याख्या**

सभी संतों का कहना है कि हमें किसी के दिल को दुखाना नहीं चाहिए। पूरनसंतों के अनुसार अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो सबसे पहले दूसरों को खुशी दो, अगर तुम सुखी जीवन जीना चाहते हो तो दूसरों को सुख दो लेकिन अगर तुम किसी के दिल को दुखाओंगे तो तुम्हे भी दुख मिलेगा, यह कुदरत का नियम है।

अगर हम दूसरों के लिए अच्छा करने की सोचेगें तो परमात्मा हमारे लिए अच्छा सोचेगा और अगर हम दूसरों के लिए अच्छे काम करेगें तो परमात्मा हमारा भी अच्छा करेगा। संतों का कहना है कि जितनी हम दूसरों की सेवा, प्रेम–प्यार, उत्साह, आध्यिात्मिक विचारो के साथ करते हैं उतना ही हम आध्यिात्मिक तरक्की करेगें और संतों की खुशी प्राप्त करेगें। जब हम दूसरों की सेवा करते हैं तो एक प्रकार से हम परमात्मा की सेवा ही करते हैं।

3. ***एक सत्संगी (नामलेवा या संतो के शिष्य) को अपने परिवार तथा आस–पास के लोगों के साथ प्रेम तथा शान्तिपूर्वक जीवन जीना चाहिए।***

***व्याख्या***

अगर हम अपने परिवार तथा आस–पास के लोगों के साथ प्रेम तथा शन्तिपूर्वक जीवन जीये तो हमारा पारिवारिक जीवन इस संसार में स्वर्ग के समान हो जायेगा। इस तरह रहने से हमारा मन परमात्मा की ओर लगेगा और ज्यादा प्यार बनेगा। सतगुरू बताते हैं कि यदि हम दूसरों के अन्दर परमात्मा का रूप देखकर प्यार करते हैं तो हम धीरे–धीरे परमात्मा का रूप हो जायेगें क्योकि परमात्मा 'प्यार' है।

प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई गलती किसी समय करता है, कुछ लोग ज्यादा गलतियाँ करते हैं, कुछ कम गलतियाँ करते हैं चाहे जैसे भी हो गलतियाँ हो जाती है लेकिन हमें दूसरों की गलतियों को माफ करना चाहिए। संतो के दिलों में, परमात्मा के दरबार में जीवों के लिए केवल दया और माफी है। सतगुरू के दरबार में जीवों के लिए माफी है लेकिन काल के राज्य में न्याय है। अगर हम दूसरों को माफ करेगें तो परमात्मा भी हमें माफ करेगा। एक बहादुर तथा नेक ह्रदय वाला ही किसी को माफ कर सकता है। जब हम किसी को उसकी गलतियों के लिए माफ करते हैं तो हम एक प्रकार से सतगुरू और परमात्मा की खुशी प्राप्त करते हैं।

4. ***सत्संगी सच्चाई और सादगी का जीवन जीते हैं तथा अपनी रोजी रोटी के साधनों के लिए कड़ी मेहनत, ईमानदारी के साथ करते हैं।***

***व्याख्या***

एक सत्संगी अपना जीवन सादगी से जीता है और जितना सम्भव हो सकता है उतनी अपनी कमाई से दूसरों की मदद करता है। जो लोग धन, प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रभाव के पीछे भागते हैं वे अधिक पाप करते हैं। एक सत्संगी

जो इस मार्ग पर चलता है वह हमेशा खुश रहता है और जो भी परमात्मा ने दिया है उसके लिए उसका शुक्राना करता है।

5. ***शिष्य गुरू और परमात्मा पर पूरा भरोसा रखता है, चाहे कितनी भी परेशानियां आ जायें, वह चिंता नहीं करता और हमेशा खुश रहता है। संतों का कहना है कि परमात्मा इंसान को सब कुछ देने वाला है।***

***व्याख्या***

वह जनता है कि जिस प्रकार एक माँ अपने सोते हुए बच्चे की देखभाल करती है उसकी सभी जरूरतों का उसे पता होता है, उसी प्रकार संत–सतगुरू जिसके दिल में हजारों संसारिक माताओं जितना प्यार होता है सदैव अपने सेवकों की देखभाल करता है और जिस समय जिस वस्तु की जरूरत होती है उसे पूरा करता है।

पूरन संतों का शिष्य हमेशा खुश रहता है चाहे जितनी भी कठिन परस्थितियाँ हो, वह हर परस्थिति में खुश रहता है। वह अपने सतगुरू की प्रशंसा करता है और वह यह बात भी जानता है कि उसके सतगुरू का हाथ खण्ड–ब्रह्माण्ड तक होता है। वह यह समझता है कि जो कुछ भी घटित होगा वह उसके भले और अच्छे के लिए होगा।

हमें परमात्मा की मौज में रहना चाहिए। जो कुछ भी हमे परमात्मा ने दिया है वह हमारे लिए सबसे अच्छा है। जो कुछ भी हमारे भाग्य में लिखा है वह हमें मिलेगा। अमीरी–गरीबी, बीमारी–तन्दुरूस्ती, सुख–दुख ये छः चीजे इंसान के शरीर बनने से पहले उसके भाग्य में लिखी होती है। संत–सतगुरू से कुछ भी छिपा नहीं होता है, वह आत्मा के बारे में सब कुछ जानता है। क्या वह कभी हमको इतनी परेशानी आने देता है ? वह नाम–दान के समय मोटे–मोटे कर्मो को खत्म कर देता है जिस प्रकार टेलर किसी कपड़े को सिलने के लिए पहले कपडो को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटता है और बेकार कपड़ा अलग करके उन छोटे–छोटे टुकड़ों को जोड़कर एक सुन्दर ड्रेस पहनने लायक बनाता है। इसी प्रकार संत–सतगुरू अपने सेवक की जिन्दगी अपने

तरीके से बनाता है। हमे प्रतिदिन ज्यादा भजन–सिमरन करना चाहिए ताकि हम सतगुरू की मौज को समझ सके।

6. ***संतमत संतोष का जीवन जीना सिखाता है।***

***व्याख्या***

व्यक्ति को अपने जीवन में केवल एक पत्नी या जीवन–साथी के साथ रहना चाहिए तथा पूरे जीवनभर उसके प्रति वफादार और ईमानदार रहना चाहिए। जीवन के सभी सुख–दुख उसके साथ मिलकर बांटने चाहिए और अपनी जिन्दगी एक दूसरे के साथ खुश, शांतिपूर्वक और सादगी के साथ जीनी चाहिए। परमात्मा ने यह रिश्ता जोड़ा है चाहे कुछ भी हो जाए इस संसार की कोई भी ताकत इसको तोड़ न पाये। संत–सतगुरू हमें समझाते हैं कि इस प्रकार का जीवन जीते हुए हम नाम–शब्द के मार्ग पर चलेगें तो परमात्मा की भक्ति और अच्छे ढंग से कर पायेगें। एक नामलेवा को यह समझना चाहिए कि पति–पत्नी के बीच का जो रिश्ता है वह अटूट एंव पवित्र है, इसके अलावा सभी को भाई–बहन की नज़र से देखना चाहिए।

7. ***संतमत करनी का मार्ग है कथनी का नहीं है।***

***व्याख्या***

मनुष्य को परमात्मा पहले और संसार को बाद में रखना चाहिए। अगर किसी को तैरना है तो उसे पानी में जाना पड़ेगा सूखी धरती पर नहीं। संतों का कहना है कि हमें कम खाना, कम बोलना, कम सोना और ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करना है। जहां चाह हो वहां रास्ते अपने आप बन जाते हैं। संतों का कहना है कि जितना ज्यादा हमारा भजन–सिमरन होगा, उतनी ज्यादा हमें गुरू की दया मिलेगी। गुरू की दया और कोशिश दोनो एक साथ काम करती हैं, सत्संगी का प्रयास और गुरू की दया दोनों होने पर भजन–सिमरन में ज्यादा तरक्की होती है।

8. ***संतों का कहना है कि परमात्मा ने हर जीव की उत्पत्ति एक महान स्रोत (नाम या शब्द) से की है और सभी जीव उसकी नजर में एक समान है। सभी जीवित प्राणियों के लिए प्रत्येक को अहिंसा तथा दया की भावना रखनी चाहिए। यही कारण है कि पूरनसंत हमें शाकाहारी भोजन करने की शिक्षा देते हैं तथा किसी भी प्रकार के नशे को करने से रोकते हैं।***

***व्याख्या***

संतों का कहना है कि परमात्मा ने हर जीव की उत्पत्ति एक महान स्रोत (नाम या शब्द) से की है और सभी जीव उसकी नजर में एक समान है इसलिए हमें नम्र होना चाहिए और सभी जीवों में ईश्वरी रूप समझते हुए आदरभाव रखना चाहिए।

संत हमें अहिंसावादी तथा दयावान होना सिखाते हैं। यही कारण है कि वे हमें शाकाहारी भोजन करने की सख्त हिदायत देते हैं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है यह प्रकृति का नियम है। जैसा हम बोयेगें वैसा हमें काटना पड़ेगा। हमारा भोजन किसी के परेशानी का कारण नहीं बनना चाहिए। संत–सतगुरू हमें किसी भी प्रकार के नशे को करने से रोकते हैं क्योंकि नशा आदि करने से हमारी चेतन शक्ति कमजोर पड़ जाती है और हम गलत काम करने लगते हैं।

9. ***संतों का कहना है कि हमें यह समझना चाहिए कि जो कुछ भी हमें इस संसार में मिला है, परमात्मा ने हमें उपहार के रूप में दिया है।***

***व्याख्या***

संतों का कहना है कि हमें यह समझना चाहिए कि जो कुछ भी हमें इस संसार में मिला है, परमात्मा ने हमें उपहार के रूप में दिया है। अगर हम यह समझते है कि यह दुनिया उसकी रचना है, उसका अपना खेल है तो हम ऐसे कर्म नहीं करेगें जो हमें उससे दूर ले जाये। लेकिन अगर हम इस

दुनिया को अपना समझेगें और उसके मोह में फॅस जायेगें तो हम पाप करेगें और संतमत और परमात्मा से दूर हो जायेगें।

10. ***संतों का रास्ता 'प्यार' का रास्ता है। उनकी दया और कृपा से जो भी कोई इस रास्ते पर आता है, वह नाम का अमृत प्राप्त करता है।***

***व्याख्या***

नाम का अमृत पीकर मन की सभी इच्छाएं और तपश समाप्त हो जाती है। अत्मा को वास्तविक शांति और संतोष प्राप्त होता है। संतों की दया, मेहर से आत्मा सचखण्ड में पहुंचकर सर्व शक्तिमान परमपिता परमात्मा में विलीन हो जाती है।

11 ***संत अपने शिष्यों को नाम का दान देते हैं। वह अपने शिष्यों को इस मार्ग पर चलने के लिए भजन–सिमरन करने का तरीका सिखाते हैं। हर रोज भजन–सिमरन करने से हम अपनी आत्मा को खुराक देते है क्योकि आत्मा की खुराक भजन–सिमरन है।***

***व्याख्या***

संत अपने शिष्यों को नाम का दान देते हैं। वह अपने शिष्यों को इस मार्ग पर चलने के लिए भजन–सिमरन करने का तरीका सिखाते हैं जो इस मार्ग पर चलता है उसकी आत्मा जन्म–मृत्यु के चक्र से आजाद होकर परमपिता परमात्मा में विलीन हो जाती है।

सभी संतों ने सुरत–शब्द–योग–अभ्यास का जो रास्ता बताया है वह गुप्त से गुप्त, ऊँचे से ऊँचा है। भजन–सिमरन आत्मा की खुराक है, हर रोज भजन–सिमरन करने से हम अपनी आत्मा को खुराक देते हैं। भजन–सिमरन के द्वारा हमारे मन की आदते बदल जायेंगी और अच्छी आदतों एवं गुणों का

विकास होगा जिससे आत्मा की तरक्की होगी और रूहानी यात्रा करने में गुरू की दया मिलेगी।

12. ***संतों का कहना है कि हमें दूसरों की कॅमियों या उनकी निंदा कभी नहीं करनी चाहिए बल्कि अपने आप का सुधार करना चाहिए। हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि दूसरों की निंदा करने से हमें कितना भारी नुकसान होता है।***

***व्याख्या***

अगर कोई अपने जीवनकाल में परमात्मा से मिलना चाहता है तो उसे किसी का दिल नही दुखाना चाहिए क्योंकि मनुष्य का दिल परमात्मा के रहने का स्थान है।

13. ***संतों का कहना हैं कि जो कोई भी इस संसार में आया है उसे एक दिन यह से जाना है। एक सत्संगी को इस संसार में प्रत्येक दिन को आखिरी दिन समझकर जीना चाहिऐ।***

***व्याख्या***

मनुष्य का जीवन छोटा और अस्थायी है फिर भी हम क्यों इस संसार की झूठी वस्तुओं से जुड़े हुऐ हैं। इस संसार की कोई भी वस्तु न तो हमारी है और न ही हमारे साथ जाएगी लेकिन संसारिक धन–दौलत तथा हुकुमत करने के लिए हम कितने पाप करते हैं जिनका भुगतान हमें खुद करना होगा।

एक सत्संगी को इस संसार में प्रत्येक दिन को आखिरी दिन समझकर जीना चाहिऐ। तब हम इस जीवन के प्रत्येक क्षण का सदपयोग करेगें और गलतियॉ एंव पाप नहीं करेगें।

14. ***संत इस बात पर जोर देते हैं कि हमें अपने माता–पिता तथा बड़ों की देखभाल और मदद जरूरत पड़ने पर प्रेम–पूर्वक करनी चाहिए।***

*व्याख्या*

संत इस बात पर जोर देते हैं कि हमें अपने माता–पिता तथा बड़ों की देखभाल और मदद जरूरत पड़ने पर प्रेम–पूर्वक सिमरन करते हुए करनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि सतगुरू उनकी देखभाल करेगा। यह सेवा ऊंची किस्मत और शुभ कर्मो से मिलती है।

***15. हमें भजन–सिमरन को जीवन में पहला स्थान देना चाहिए और हर रोज सुवह–शाम, भजन–सिमरन प्यार और विश्वास के साथ करना चाहिए।***

*व्याख्या*

हमें दिन की शुरूआत और अन्त भजन–सिमरन से करनी है। सुवह 3 वजे 'अमृत वेले' उठना है, इस समय किसी भी प्रकार का कोई शोर–शरावा नहीं होता है। सभी संतों का कहना है कि अमृत वेला परमात्मा की भक्ति करने का उत्तम समय है क्योकि इस समय सतगुरू सचखण्ड से जीवों के लिए दया लेकर आता है जो आत्मा भजन–सिमरन पर बैठी होती हैं वह सतगुरू की दया प्राप्त करती हैं और जो सोते रहते हैं वह सतगुरू की दया से महरूम रह जाते हैं।

इसी तरह रात में सोने से पहले सत्संगी को भजन–सिमरन करके, सतगुरू की मीठी यादों को अपने ह्रदय में वसा कर सोना चाहिए ताकि सोते समय रूह का खींचाव सतगुरू की ओर रहे और सुवह 3 वजे 'अमृत वेले' उठकर सतगुरू की दया प्राप्त कर सके।

गुरू के प्यारों, हमें भजन–सिमरन को अपनी जिन्दगी में पहला स्थान देना है। भजन–सिमरन के द्वारा मन की आदतें बदल जाती हैं। केवल भजन–सिमरन में वह ताकत है जो मन की आदतों को बदल सकता है। सिमरन ही परमात्मा है। हम शांत मन से ज्यादा समय तक भजन–सिमरन कर सकते हैं। सिमरन से हमारा मन शांत होता है और परमात्मा से प्यार बनता है। सिमरन करने से हमारे सभी काम बनते हैं। जब हम दिन–रात

सतगुरू का दिया हुआ सिमरन करते है सिमरन हमारे साथ है तो सतगुरू भी हमारे साथ होता है। सत्संगी का सिमरन ऐसा होना चाहिए जिस प्रकार तेल का प्रवाह होता है जो कभी रूकता नही, इसी प्रकार हमें सिमरन लगातार करते रहना चाहिए। अगर हमारे मन का ख्याल सिमरन करते समय दुनिया की ओर जाता है तो हमें अपने मन को बार–बार एकाग्रचित करके सिमरन करते रहना चाहिए। इस प्रकार हमार मन सिमरन की ओर लगेगा और हर पल हम सिमरन करने लगेगें और बाहरी कोई भी रूकावट हमें परेशान नहीं कर पायेगी। संत जी कहते हैं कि इस प्रकार  सिमरन करने से उनकी आत्मा को हर खुशी प्राप्त हुई है।

***16. संतों की संगत (सत्संग) मनुष्य के लिए वास्तव में लाभकारी है।***

*व्याख्या*

घर में रहकर 100 वर्षो तक भजन–सिमरन करने से उतनी आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती है जितनी पूरनसंतों की संगत में बिताये हुए 20 मिनट से होती है। परमात्मा से अलग हुए हमें इतना लम्बा समय हो गया कि हम उसके बिछोड़े को भूलकर संसार के मोह–माया में फॅसकर रहे गये हैं। पूरन सतगुरू के मिलाप से हमें यह ऐहसास होता है कि परमात्मा से बिछड़े हुए हमें कई योग हो गया है।

संत अजायब सिंह जी कहा करते थे कि मानस जन्म बहुत ऊंची किस्मत से मिलता है और उससे बड भाग्य सतगुरू के मिलाप का होता है। सतगुरू से नाम का दान भी बहुत ऊंची किस्मत बालो को मिलता है, मुक्ति नाम में है। जब हमारी किस्मत साथ देती है तब ही हम सतगुरू के सत्संग में जाते हैं और उनके अनमोल वचनों को ध्यान से सुनकर उस पर अमल करके अपने जीवन को उनके अनुसार ढालते हैं और भजन–सिमरन करके सतगुरू की दया प्राप्त करते हैं।